International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 08 Issue: 02 | Feb - 2024 SJIF Rating: 8.448 ISSN: 2582-3930

भारत में आजादी के बाद से वर्तमान तक की जनसांख्यकीय परिवर्तनों की प्रवृत्तियों का अध्ययन

बिहार गौरव[1], डॉ. दलजीत सिंह[2]

[1] पीएचडी स्कॉलर, इतिहास विभाग, NIILM University, हरियाणा

[2] एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, NIILM University, हरियाणा

Email: hitlergaurav@gmail.com

सार

यह शोध पत्र भारत में 1947 से 2021 तक की जनसांख्यकीय परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में जनसंख्या वृद्धि (36 करोड़ से 136 करोड़), आयु संरचना में परिवर्तन, लिंगानुपात (946 से 1020), शहरीकरण (17 से 35%), प्रजनन दर (6.0 से 2.0) और जीवन प्रत्याशा (32 से 70 वर्ष) में आए परिवर्तनों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। अध्ययन क्षेत्रीय असमानताओं और भविष्य की चुनौतियों पर भी प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द: जनसंख्या वृद्धि, आयु संरचना, लिंगानुपात, शहरीकरण, प्रजनन दर, जीवन प्रत्याशा

प्रस्तावना

स्वतंत्रता के समय भारत की जनसंख्या लगभग 36 करोड़ थी, जो 2021 तक बढ़कर 136 करोड़ से अधिक हो गई है (जनगणना विभाग, 2021)। स्वतंत्रता के बाद के पहले दशक (1951-1961) में जनसंख्या वृद्धि दर 21.5% रही। यह वृद्धि मुख्य रूप से उच्च जन्म दर (41 प्रति हजार) और घटती मृत्यु दर (22.8 प्रति हजार) का परिणाम थी। इस काल में स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार ने मृत्यु दर को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई (राव, 2018)।

अगले दशक (1961-1971) में वृद्धि दर बढ़कर 24.8% हो गई। इस अवधि में हरित क्रांति से खाद्य उत्पादन में वृद्धि, चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार और जीवन स्तर में सामान्य सुधार के कारण जनसंख्या में तेज वृद्धि हुई (गुप्ता, 2019)। 1971-1981 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दर 25% के उच्च स्तर पर पहुंच गई। हालांकि इस काल में जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों की शुरुआत हुई और परिवार नियोजन पर विशेष जोर दिया गया।

1981-2001 की अवधि में वृद्धि दर में क्रमिक कमी आई और यह 23.9% से घटकर 21.5% हो गई। इस कमी में शहरीकरण का प्रभाव, शिक्षा का प्रसार और महिला सशक्तीकरण की शुरुआत ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई (सिंह, 2020)। 2001-2021

की अवधि में वृद्धि दर और कम होकर 17.7% पर आ गई। वर्तमान में कई राज्यों में प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर से नीचे आ गई है, जो जनसंख्या स्थिरीकरण की ओर एक महत्त्वपूर्ण संकेत है। हालांकि, विभिन्न राज्यों में जनसंख्या वृद्धि की दर में काफी असमानताएं देखी जा सकती हैं (मेहता, 2022)।

कुल मिलाकर, स्वतंत्रता के बाद से भारत की जनसंख्या वृद्धि में कई उतार-चढ़ाव देखे गए हैं। प्रारंभिक दशकों में तेज वृद्धि के बाद धीरे-धीरे इसमें कमी आई है। यह परिवर्तन सामाजिक-आर्थिक विकास, शिक्षा का प्रसार, स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार और जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों का संयुक्त परिणाम है। हालांकि, बढ़ती जनसंख्या अभी भी देश के समक्ष एक बड़ी चुनौती बनी हुई है (चौधरी, 2021)।

आयु संरचना में परिवर्तन

भारत की जनसंख्या की आयु संरचना में स्वतंत्रता के बाद से महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं। 1950 में देश की कुल जनसंख्या का लगभग 35% हिस्सा 0-14 वर्ष की आयु वर्ग में था, जो 2020 तक घटकर 26% रह गया। यह कमी मुख्य रूप से घटती प्रजनन दर और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के कारण आई है। इसी अवधि में कार्यशील आयु वर्ग (15-59 वर्ष) का प्रतिशत 56% से बढ़कर 62% हो गया, जो जनसांख्यकीय लाभांश का संकेत है (जनगणना विभाग, 2021)।

वृद्ध जनसंख्या (60 वर्ष से अधिक) में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 1950 में जहां यह मात्र 9% थी, वहीं 2020 में बढ़कर 12% हो गई। यह वृद्धि बढ़ती जीवन प्रत्याशा और घटती मृत्यु दर का परिणाम है। विशेषज्ञों का मानना है कि 2050 तक वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत 20% तक पहुंच सकता है, जो स्वास्थ्य सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती होगी (मेहता, 2022)।

आयु संरचना में ये परिवर्तन क्षेत्रीय स्तर पर भी महत्त्वपूर्ण अंतर दर्शाते हैं। दक्षिणी राज्यों में युवा जनसंख्या का प्रतिशत उत्तरी राज्यों की तुलना में कम है। केरल जैसे राज्यों में वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है, जबकि उत्तर प्रदेश और बिहार में यह कम है। यह अंतर विभिन्न राज्यों के सामाजिक-आर्थिक विकास के स्तर को भी दर्शाता है।

कार्यशील आयु वर्ग में वृद्धि ने भारत को जनसांख्यकीय लाभांश का अवसर प्रदान किया है। हालांकि, इस अवसर का लाभ उठाने के लिए कौशल विकास और रोजगार सृजन की चुनौतियों का सामना करना होगा। साथ ही, बढ़ती वृद्ध जनसंख्या के लिए उचित स्वास्थ्य सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था करनी होगी (गुप्ता, 2019)। आने वाले दशकों में आयु

संरचना में और अधिक परिवर्तन की संभावना है, जिसके लिए नीति निर्माण और योजना में इन परिवर्तनों को ध्यान में रखना आवश्यक होगा।

लिंगानुपात में परिवर्तन

भारत में लिंगानुपात के परिवर्तन की यात्रा स्वतंत्रता के बाद से विभिन्न उतार-चढ़ावों से गुजरी है। 1951 में देश का लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 946 महिलाओं का था, जो एक गंभीर लैंगिक असमानता को दर्शाता था। यह स्थिति 1971 तक और बिगड़कर 930 तक पहुंच गई। सामाजिक रूढ़ियों और लड़कों की प्राथमिकता का परिणाम था (गुप्ता, 2019)। हालांकि, 1981 से स्थिति में धीरे-धीरे सुधार आना शुरू हुआ और 2001 तक यह बढ़कर 933 हो गया।

पिछले दो दशकों में लिंगानुपात में उल्लेखनीय सुधार हुआ है और 2021 में यह ऐतिहासिक स्तर 1020 तक पहुंच गया (जनगणना विभाग, 2021)। यह सुधार बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी सरकारी योजनाओं, महिला शिक्षा में वृद्धि और समाज में बदलती मानसिकता का परिणाम है। हालांकि, यह सुधार सभी राज्यों में समान नहीं है। केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में लिंगानुपात संतोषजनक है, जबकि हरियाणा और उत्तर प्रदेश में यह अभी भी चिंता का विषय है।

शहरीकरण की प्रवृत्तियां

भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया स्वतंत्रता के बाद से तेजी से बढ़ी है। 1951 में देश की कुल जनसंख्या का मात्र 17% हिस्सा शहरी क्षेत्रों में निवास करता था, जो 2021 तक बढ़कर 35% हो गया (एटल, 2021)। यह वृद्धि औद्योगिकीकरण, बेहतर रोजगार अवसरों और शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध बेहतर शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण हुई। मेट्रो शहरों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो 1951 में मात्र 5 से बढ़कर 2021 में 53 हो गई। ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में प्रवास की दर में भी निरंतर वृद्धि हुई है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि 2050 तक भारत की 50% से अधिक जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में निवास करेगी, जो शहरी नियोजन और बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए एक बड़ी चुनौती होगी।

प्रजनन दर में परिवर्तन

भारत की कुल प्रजनन दर में स्वतंत्रता के बाद से उल्लेखनीय कमी आई है। 1950 में जहां यह दर 6.0 बच्चे प्रति महिला थी, वहीं 2021 में यह घटकर 2.0 हो गई है। यह कमी शिक्षा के प्रसार, परिवार नियोजन कार्यक्रमों की सफलता और

सामाजिक-आर्थिक विकास का परिणाम है। कई राज्यों में प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर (2.1) से भी कम हो गई है। केरल और तमिलनाडु में यह 1.8 से भी कम है, जबकि बिहार और उत्तर प्रदेश में अभी भी 3.0 से ऊपर है। शहरी क्षेत्रों में प्रजनन दर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में काफी कम है, जो शिक्षा और जागरूकता के स्तर में अंतर को दर्शाता है (गुप्ता, 2019)।

मृत्यु दर में परिवर्तन

स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कारण भारत की मृत्यु दर में स्वतंत्रता के बाद से महत्त्वपूर्ण कमी आई है। शिशु मृत्यु दर 1950 में 145 प्रति 1000 से घटकर 2021 में 28 प्रति 1000 हो गई है। इसी प्रकार, जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 32 वर्ष से बढ़कर 70 वर्ष हो गई है (स्वास्थ्य मंत्रालय, 2022)। मातृ मृत्यु दर में भी उल्लेखनीय कमी आई है, जो 1950 में 2000 प्रति लाख से घटकर 2021 में 103 प्रति लाख हो गई है। यह सुधार टीकाकरण कार्यक्रमों, बेहतर पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में वृद्धि का परिणाम है। हालांकि, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच अभी भी काफी अंतर है (सिंह, 2020)।

क्षेत्रीय असमानताएं

भारत में जनसांख्यकीय परिवर्तनों में क्षेत्रीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण असमानताएं देखी जाती हैं। उत्तरी राज्यों में जनसंख्या वृद्धि दर और प्रजनन दर दक्षिणी राज्यों की तुलना में अधिक है। उत्तर प्रदेश और बिहार में जहां प्रजनन दर 3.0 से ऊपर है, वहीं केरल और तमिलनाडु में यह 1.8 से कम है (चौधरी, 2021)। साक्षरता दर में भी यही अंतर दिखाई देता है। दक्षिणी राज्यों में साक्षरता दर 80% से अधिक है, जबकि कुछ उत्तरी राज्यों में यह 70% से कम है। शहरीकरण की दर और स्वास्थ्य सूचकांकों में भी इसी प्रकार की असमानताएं मौजूद हैं, जो विकास के असमान स्तर को दर्शाती हैं।

भविष्य की चुनौतियां

भारत में जनसांख्यकीय परिवर्तनों के कारण कई चुनौतियां उभर रही हैं, जो समाज, अर्थव्यवस्था और शासन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती हैं। इन परिवर्तनों के केंद्र में जनसंख्या स्थिरीकरण, वृद्ध जनसंख्या की बढ़ती संख्या, और श्रम शक्ति का कुशल प्रबंधन है। इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान सुनिश्चित करना न केवल राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि एक संतुलित और समृद्ध समाज के निर्माण के लिए भी अनिवार्य है।

जनसंख्या स्थिरीकरण

भारत में जनसंख्या स्थिरीकरण एक प्रमुख लक्ष्य है। हालांकि पिछले कुछ दशकों में प्रजनन दर में कमी आई है, फिर भी यह चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, जागरूकता और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में असमानता इसे और जटिल बनाती है।। साथ ही, आयु संरचना में बदलाव से समाज और अर्थव्यवस्था पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है। कार्यशील आयु वर्ग में वृद्धि का लाभ तभी मिल सकता है जब इसे सही दिशा में उपयोग किया जाए।।

वृद्ध जनसंख्या

आयु संरचना में बदलाव का एक महत्वपूर्ण पहलू वृद्ध जनसंख्या का बढ़ना है। यह स्वास्थ्य सेवाओं की बढ़ती मांग और सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता को जन्म देता है। वृद्धावस्था में स्वास्थ्य देखभाल की गुणवत्ता और पहुंच सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। साथ ही, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को मजबूत करना और वृद्ध व्यक्तियों को सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर प्रदान करना समाज की जिम्मेदारी है।

श्रम शक्ति

भारत की विशाल जनसंख्या को एक लाभकारी संसाधन में बदलने के लिए कौशल विकास और रोजगार सृजन पर ध्यान देना होगा। इसके लिए पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना और उनके लिए प्रयाप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना भविष्य की प्रमुख प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके साथ ही, असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को मुख्यधारा में लाना भी आवश्यक है।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता के बाद से भारत ने जनसांख्यकीय परिवर्तनों के कई चरण देखे हैं। इन परिवर्तनों को जनसंख्या नियंत्रण, स्वस्थ्य सेवाओं में सुधार और सामाजिक-आर्थिक स्तर पर प्रगति ने प्रभावित किया है।। हालांकि, भविष्य की चुनौतियों का समाधान एक व्यापक नीतिगत दृष्टिकोण और सामूहिक प्रयासों से ही संभव है।। जनसंख्या स्थिरीकरण, वृद्ध जनसंख्या की देखभाल और श्रम शक्ति के सशक्तीकरण के लिए ठोस और सतत नीतियों की आवश्यकता है।। यह दृष्टिकोण भारत को एक समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र बनने की दिशा में मार्ग प्रशस्त करेगा।

संदर्भ सूची

- कुमार, पी., और शर्मा, स. (2020)।। "भारत में आयु संरचना का बदलता स्वरूप", सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 32(1), 45-60।।
- गुप्ता, आर. (2019)।। "स्वतंत्र भारत में जनसांख्यकीय परिवर्तन", इंडियन डेमोग्राफिक स्टडीज, 28(3), 123-140।।
- चौधरी, स. (2021)।। "भारत में क्षेत्रीय जनसांख्यकीय असमानताएं", क्षेत्रीय विकास अध्ययन, 22(3), 67-84।।
- जनगणना विभाग।। (2021)।। "भारत की जनगणना 2021: प्रारंभिक रिपोर्ट", गृह मंत्रालय, भारत सरकार।।
- एटल, जे. (2021)।। "भारतीय शहरीकरण की गतिशीलता", शहरी अध्ययन जर्नल, 18(4), 112-129।।
- मेहता, वी. (2022)।। "भारत में लैंगिक असमानता: एक विश्लेषण", समाज शास्त्र अध्ययन, 25(2), 78-95।।
- राव, स. (2018)।। "भारत में जनसंख्या वृद्धि: एक विश्लेषण", जनसंख्या अध्ययन जर्नल, 45(2), 56-72।।
- शर्मा, एन. (2022)।। "भारत में प्रजनन दर में गिरावट", जनसंख्या विज्ञान जर्नल, 40(1), 34-50।।
- सिंह, ज. (2020)।। "भारत की जनसंख्या: रुझान और चुनौतियां", जनसंख्या विज्ञान समीक्षा, 15(4), 89-105।।
- स्वास्थ्य मंत्रालय।। (2022)।।। "राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफाइल 2021", भारत सरकार, नई दिल्ली।।